पाठ 40

1. जब शाऊल ने परमेश्वर की अवज्ञा की, तो परमेश्वर ने इस्राएल के अगले राजा के रूप में किसे चुना?

-दाऊद।

2. शाऊल और दाऊद किस प्रकार भिन्न थे?

-शाऊल को विश्वास नहीं था कि वह परमेश्वर से अलग किए गए पाप में पैदा हुआ था, लेकिन दाऊद ने किया।

-शाऊल यह नहीं मानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मृत्यु से दण्डित करता है, परन्तु दाऊद ने किया।

-शाऊल को विश्वास नहीं था कि केवल ईश्वर ही उसे बचा सकता है, लेकिन दाऊद ने किया।

-शाऊल ने उद्धारकर्ता को भेजने के परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया, परन्तु दाऊद ने किया।

3. दाऊद ने अपना घर बनाने के बाद, वह क्या करना चाहता था?

-दाऊद परमेश्वर के लिए एक घर बनाना चाहता था।

4. परमेश्वर के लिए घर बनाने वाला कौन था?

-दाऊद का बेटा, सुलैमान।

5. परमेश्वर ने दाऊद से जो महान प्रतिज्ञा की थी वह क्या थी?

-परमेश्वर ने वादा किया कि वह दाऊद के वंशजों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजेगा।

6. जो मन्दिर सुलैमान ने परमेश्वर के लिये बनाया, वह उस तम्बू के समान कैसा था जिसे इस्राएलियों ने जंगल में परमेश्वर के लिये बनाया था?

-तंबू और मंदिर दोनों में एक पहला कमरा था जिसे पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-तंबू और मंदिर दोनों में एक दूसरा कमरा था जिसे परम पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-डेरे और मंदिर दोनों में एक परदा था जो दोनों कमरों को अलग करता था।

7. क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और सभी पापों से घृणा करता है, महायाजक ने परमपवित्र स्थान में क्या किया?

-उसने वाचा के सन्दूक पर पशुओं का खून छिड़का।

8. परमेश्वर क्या करेगा जब उसने उस लहू को देखा जिसे मुख्य याजक ने वाचा के सन्दूक पर छिड़का था?

-जब तक पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता, तब तक परमेश्वर लोगों के पापों की सजा को एक और वर्ष के लिए रोक देगा।

9. जानवरों का लहू लोगों के पापों का भुगतान क्यों नहीं कर पाया?

-क्योंकि पाप की कीमत पापी की मृत्यु से चुकानी पड़ती है।

10. राजा सुलैमान के मरने के बाद इस्राएलियों का क्या हुआ?

-इस्राएली इस बात पर सहमत नहीं हो सके कि अगला राजा कौन होगा। इसलिए, इस्राएलियों के बारह गोत्र अलग हो गए और दो लोग हो गए।

11. उत्तर के दस गोत्रों को क्या कहा जाता था?

-इजराइल।

12. दक्षिण की दो जनजातियों को क्या कहा जाता था?

-यहूदा।

-परमेश्वर ने हमेशा लोगों से क्यों बात की है?

-कि वे बच जाएंगे।

-परमेश्वर ने लोगों को लोगों से बात करने के लिए अपना संदेश भी दिया है, कि वे बच जाएंगे।

-परमेश्वर ने अपना सन्देश नूह को दिया, और नूह ने लोगों से कहा, कि वे उद्धार पाएंगे।

-परमेश्वर ने मूसा को अपना संदेश दिया, और मूसा ने फिरौन और मिस्रियों से कहा, कि वे बच जाएंगे।

-परमेश्वर ने यहोशू को अपना सन्देश दिया, और यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, कि वे उद्धार पाएँ।

-एक दिन, परमेश्वर ने योना नाम के एक इस्राएली को बुलाया।

-परमेश्वर ने योना को अपना संदेश दिया, और योना को आज्ञा दी कि वह अपना संदेश नीनवे नामक शहर में रहने वाले दुष्ट लोगों तक ले जाए।

-जो लोग नीनवे नगर में रहते थे, वे अश्शूर कहलाते थे।

आइए पढ़ें योना 1:1-3

1- यहोवा का यह वचन अमितै के पुत्र योना के पास पहुंचा:

2- “नीनवे के बड़े नगर में जाकर उसके विरुद्ध प्रचार कर, क्योंकि उसकी दुष्टता मुझ से आगे बढ़ गई है।”

3-परन्तु योना यहोवा के पास से भागा, और तर्शीश को गया।

-परमेश्वर क्यों चाहता था कि योना नीनवे शहर जाए?

-क्योंकि परमेश्वर नीनवे के लोगों से प्रेम करता था।

-क्योंकि परमेश्वर नीनवे के लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाना चाहता था।

-योना क्यों भाग गया?

-योना भाग गया क्योंकि वह नीनवे नगर में नहीं जाना चाहता था।

-योना नीनवे शहर क्यों नहीं जाना चाहता था?

-क्योंकि नीनवे के लोग बहुत दुष्ट थे।

-क्योंकि नीनवे के लोग इस्राएलियों के शत्रु थे।

-क्योंकि योना नहीं चाहता था कि परमेश्वर नीनवे के लोगों को बचाए।

-क्या योना परमेश्वर से दूर भागने में सक्षम था?

आइए पढ़ें योना 1:3-10

3-योना याफा को गया, जहां उसे उस बंदरगाह के लिए एक जहाज बंधा हुआ मिला। किराया चुकाने के बाद, वह सवार हुआ और यहोवा के पास से भागने के लिए तर्शीश के लिए रवाना हुआ।

4-तब यहोवा ने समुद्र पर एक बड़ी आँधी चलाई, और ऐसा भयंकर आँधी उठा कि जहाज टूटने का भय उत्पन्न कर दिया।

5-सब मल्लाह डर गए, और अपके अपके परमेश्वर की दोहाई दी। और उन्होंने जहाज को हल्का करने के लिए माल को समुद्र में फेंक दिया। परन्तु योना छत के नीचे चला गया था, जहां वह लेट गया और गहरी नींद में सो गया।

6-कप्तान उसके पास गया और बोला, "तू कैसे सो सकता है? उठो और अपने परमेश्वर को पुकारो! हो सकता है कि वह हम पर ध्यान दे, और हम नाश न हों।"

7-तब नाविकों ने आपस में कहा, "आओ, चिट्ठी डालकर पता करें कि इस विपत्ति का दोषी कौन है।" उन्होंने चिट्ठी डाली और चिट्ठी योना पर गिर पड़ी।

8-सो उन्होंने उससे पूछा, “बताओ, हमारे लिए यह सब विपत्ति डालने का जिम्मेवार कौन है? आप क्या करते हैं? आप कहां से हैं? आपका देश कोन सा हे? आप किन लोगों से हो?"

9-योना ने उत्तर दिया, "मैं एक इब्री हूं और मैं स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करता हूं, जिस ने समुद्र और भूमि को बनाया।"

10-इस से वे घबरा गए और उन्होंने पूछा, “तुमने क्या किया है?” (वे जानते थे कि वह यहोवा के पास से भाग रहा है, क्योंकि उस ने उन से ऐसा कह भी दिया था।)

-क्या योना परमेश्वर से दूर भागने में सक्षम था?

-नहीं।

-क्या योना परमेश्वर से छिपने में सक्षम था?

-नहीं।

-क्या योना परमेश्वर से बचने में सक्षम था?

-नहीं।

-परमेश्वर से कोई नहीं बच सकता।

-यहां तक कि शैतान और उसके राक्षस भी परमेश्वर से बच नहीं सकते।

आइए पढ़ें योना 1:11-17

11-समुद्र कठोर और कठोर होता जा रहा था। तब उन्होंने योना से पूछा, हम तुझ से क्या करें, कि समुद्र हमारे लिथे शान्त हो जाए?

12- "मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो," योना ने उत्तर दिया, "और यह शांत हो जाएगा। मैं जानता हूँ कि यह मेरी गलती है कि यह बड़ा तूफ़ान तुम पर आया है।"

13-इसके बजाय, पुरुषों ने जमीन पर वापस जाने की पूरी कोशिश की। परन्तु वे ऐसा न कर सके, क्योंकि समुद्र पहिले से भी अधिक वीरान हो गया है।

14-तब उन्होंने यहोवा की दोहाई दी, "हे यहोवा, हम इस मनुष्य के प्राण लेने के कारण मरने न दें। किसी निर्दोष को मार डालने के लिथे हम को दोषी न ठहरा, क्योंकि हे यहोवा, तू ने जो चाहा वह किया है।"

15-तब उन्होंने योना को पकड़कर पानी में फेंक दिया, और समुद्र का जल शांत हो गया।

16-इस पर वे लोग यहोवा का बहुत भय मानते थे, और उन्होंने यहोवा के लिथे यज्ञ किया, और उसकी मन्नत मानी।

17-परन्तु यहोवा ने योना को निगलने के लिथे एक बड़ी मछली दी, और योना तीन दिन और तीन रात उस मछली के भीतर रहा।

-जब योना ने परमेश्वर की अवज्ञा की और नीनवे नहीं गया तो परमेश्वर ने क्या किया?

-परमेश्वर ने योना को निगलने के लिए एक बड़ी मछली भेजी।

-योना बड़ी मछली के पेट में कब तक रहा?

-तीन दिन और तीन रात के लिए।

-क्या योना बड़ी मछली के पेट में खुद को बचाने में सक्षम था?

-नहीं।

-अकेला कौन था जो योना को बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-कैसे सभी लोग योना की तरह हैं?

-जैसे योना बड़ी मछली के पेट से खुद को नहीं बचा पाया,

-सभी लोग पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से खुद को बचाने में सक्षम नहीं हैं।

-जैसे केवल परमेश्वर ही योना को बचाने में सक्षम था, केवल परमेश्वर ही सभी लोगों को बचाने में सक्षम है।

-योना ने बड़ी मछली के पेट में क्या किया?

आइए पढ़ें योना 2:1

1-मछली के भीतर से योना ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की।

-योना ने परमेश्वर को स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर की अवज्ञा की थी।

-योना ने परमेश्वर के सामने स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-योना ने उसे बचाने के लिए परमेश्वर से गुहार लगाई।

-क्या परमेश्वर ने योना को बचाया?

आइए पढ़ें योना 2:10

10-और यहोवा ने मछली को आज्ञा दी, और उस ने योना को सूखी भूमि पर उगल दिया।

-परमेश्वर ने क्या किया जब योना ने स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर की अवज्ञा की और परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया?

-परमेश्वर ने बड़ी मछली को योना को सूखी भूमि पर उल्टी करवा दी।

-परमेश्वर ने योना को क्यों बचाया?

-क्योंकि योना ने स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर की अवज्ञा की थी।

-क्योंकि योना ने स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-जब परमेश्वर ने योना को बचाया, तो क्या परमेश्वर ने योना से कहा कि उसे नीनवे जाने की आवश्यकता नहीं है?

-नहीं।

आइए पढ़ें योना 3:1-2

1-तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा:

2- “नीनवे के बड़े नगर में जाकर जो सन्देश मैं तुझे देता हूँ उसका प्रचार कर।”

-परमेश्वर नहीं बदलते।

-परमेश्वर कभी नहीं बदलते।

-परमेश्वर अभी भी चाहता था कि योना अपना संदेश नीनवे के लोगों तक ले जाए।

-परमेश्वर अभी भी नीनवे के लोगों को बचाना चाहता था।

-इस बार, क्या योना ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और नीनवे को गया?

आइए पढ़ें योना 3:3-5 और 10

3-योना ने यहोवा के वचन का पालन किया और नीनवे को गया। अब नीनवे एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर था - एक यात्रा के लिए तीन दिनों की आवश्यकता थी।

4-पहले दिन योना ने नगर में प्रवेश किया। उसने घोषणा की: “चालीस दिन और नीनवे उलट दिया जाएगा।”

5-नीनवे के लोग परमेश्वर पर विश्वास करते थे। उन्होंने उपवास की घोषणा की, और बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने टाट ओढ़ लिया।

10-जब परमेश्वर ने देखा कि वे क्या करते हैं, और वे किस रीति से अपने बुरे मार्गों से फिरते हैं, तो उस ने तरस खाया, और उन पर वह विनाश न लाया जिस की उस ने धमकी दी थी।

-इस बार योना ने परमेश्वर की बात मानी और नीनवे को गया।

-इस बार, योना परमेश्वर के संदेश को नीनवे तक ले गया।

-योना ने नीनवे के लोगों को पाप का मार्ग छोड़कर परमेश्वर के मार्ग पर चलने को कहा।

-क्या नीनवे के लोगों ने परमेश्वर का वह संदेश सुना जो योना ने उन्हें बताया था?

-हां।

-परमेश्वर चाहता है कि आप नीनवे के लोगों की तरह बनें।

-परमेश्वर चाहता है कि आप नीनवे के लोगों की तरह उसका संदेश सुनें।

-परमेश्वर चाहता है कि आप नीनवे के लोगों की तरह उसके संदेश पर विश्वास करें।

-परमेश्वर चाहते हैं कि आप पाप का मार्ग छोड़ कर ईश्वर के मार्ग पर चलें।

-परमेश्वर ने अपने दूत बनने के लिए और लोगों को अपना संदेश बताने के लिए कई अन्य लोगों को भी चुना।

-उन लोगों को क्या कहा जाता था जिन्हें परमेश्वर ने अपना दूत बनने के लिए चुना था, और लोगों को अपना संदेश बताने के लिए?

-भविष्यद्वक्ता।

-परमेश्वर ने कुछ भविष्यद्वक्ताओं को इस्राएल के दस गोत्रों के लोगों के पास भेजा।

-परमेश्वर ने कुछ भविष्यद्वक्ताओं को यहूदा के दो गोत्रों के लोगों के पास भेजा।

-भविष्यवक्ताओं ने लोगों से क्या कहा?

-पाप का मार्ग छोड़कर ईश्वर के मार्ग पर चलना।

-भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को यह भी बताया कि परमेश्वर चाहता था कि वे उनकी छवियों को नष्ट कर दें।

-परमेश्वर के नबियों में से एक का नाम यशायाह था।

-भविष्यवक्ता यशायाह इस्राएल के दस गोत्रों के लोगों के पास गया।

परमेश्वर ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा इस्राएल के दस गोत्रों से क्या कहा:

आइए पढ़ें यशायाह 10:6

6-यहोवा ने कहा, "मैं अश्शूर को एक भक्तिहीन जाति इस्राएल के विरुद्ध भेजता हूं। मैं उसे उन लोगों के विरुद्ध भेजता हूँ जो मुझ पर क्रोध करते हैं, कि लूट और लूट को जब्त कर लें, और उन्हें सड़कों पर कीचड़ की तरह रौंद दें। "

-इस्राएल के दस गोत्रों का क्या होगा यदि वे पाप का मार्ग न छोड़े, और परमेश्वर के मार्ग पर न चलें?

-परमेश्वर अश्शूरियों को इस्राएल के दस गोत्रों को हराने और उन्हें अपना दास बनाने के लिए भेजेगा।

-परमेश्वर के एक और भविष्यद्वक्ता का नाम यिर्मयाह था।

-भविष्यवक्ता यिर्मयाह यहूदा के दो गोत्रों के लोगों के पास गया।

परमेश्वर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहूदा के दो गोत्रों से यह कहा:

आइए पढ़ें यिर्मयाह 20:5

5-यहोवा ने कहा, "मैं यहूदा के शत्रुओं के हाथ में इस नगर की सारी संपत्ति, उसकी सारी उपज, और उसका सारा धन, और यहूदा के राजाओं का सब भण्डार दूँगा। वे उसे लूट की नाईं ले लेंगे और बाबुल को ले जाएंगे।"

-यहूदा के दो गोत्रों का क्या होगा यदि वे पाप का मार्ग नहीं छोड़ते, और परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण नहीं करते?

-यहूदा के दो गोत्रों को हराने और उन्हें अपना दास बनाने के लिए परमेश्वर बाबुलियों को भेजेगा।

-परमेश्वर नहीं बदला है।

-परमेश्वर अभी भी चाहते हैं कि सभी लोग पाप का मार्ग छोड़ कर परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करें।

-परमेश्वर उन सभी को अनन्त मृत्यु की सजा देंगे जो पाप का मार्ग नहीं छोड़ते हैं, और ईश्वर के मार्ग का अनुसरण करते हैं।